Sub:- C6 Gender school + society
Topic :- Gender difference (लिंग भेद)

समानता एक सुन्दर तथा सुरक्षित समाज की वह नींव है, जिस पर विकास रूपी इमारत बनाई जा सकती है। लैंगिक समानता का सीधा-सा अर्थ समाज में महिला तथा पुरुष के समान अधिकार, दायित्व तथा रोजगार के अवसरों के परिप्रेक्ष्य में है। समाज में लैंगिक भेद सोच-समझकर बनाई गई एक खाई है, जिससे समानता के स्तर को प्राप्त करने का सफर बहुत मुश्किल हो जाता है।

लैंगिक भेद का तात्पर्य लैंगिक आधार पर महिलाओं के साथ भेदभाव से है। समाज में महिलाओं को कमजोर वर्ग के रूप में देखा जाता रहा है। वे घर तथा समाज दोनों जगहों पर शोषण, अपमान और भेदभाव से पीड़ित होती है।

लैंगिक भेदभाव के क्षेत्र :-

(i) सामाजिक क्षेत्र में
(ii) आर्थिक क्षेत्र में
(iii) राजनीतिक क्षेत्र में
(iv) विज्ञान के क्षेत्र में
(v) मनोरंजन के क्षेत्र में
(vi) खेल के क्षेत्र में।

सामाजिक क्षेत्र में :- भारतीय समाज में प्रायः महिलाओं को घरेलू कार्य के ही अनुकूल माना गया है। घर में महिलाओं का मुख्य कार्य भोजन की व्यवस्था करना तथा बच्चों के लालन-पालन तक ही सीमित है। घर में लिये जानेवाले निर्णयों में भी महिलाओं की कोई भूमिका नहीं रहती है।

आर्थिक क्षेत्र में :- आर्थिक क्षेत्र में कार्यरत महिला और पुरुष में

पारिश्रमिक में अंतर है। इतना ही नहीं रोजगार के अवसरों में भी पुरुषों को ही प्राथमिकता दी जाती है।

राजनीतिक क्षेत्र में :- सभी राजनीतिक दल लोकतांत्रिक होते हुए समानता का दावा करते हैं परन्तु वे न तो चुनाव में महिलाओं को प्रत्याशी के रूप में टिकट देते हैं और न ही दल के प्रमुख पदों पर उनकी नियुक्ति करते हैं।

विज्ञान के क्षेत्र में :- वैज्ञानिक समुदाय में या तो महिलाओं का प्रवेश ही मुश्किल से होता है या उन्हें कम महत्व के प्रोजेक्ट में लगा दिया जाता है। यह विडंबना ही है कि हम मिसाइल मैन के नाम से प्रसिद्ध स्वर्गीय ए.पी.जे. अब्दुल कलाम से परिचित हैं लेकिन मिसाइल वूमेन ऑफ इंडिया टेसी थॉमस के नाम से परिचित नहीं है।

मनोरंजन के क्षेत्र में :- मनोरंजन के क्षेत्र में अभिनेत्रियों को भी इस भेदभाव का शिकार होना पड़ता है। अक्सर फिल्मों में अभिनेत्रियों को मुख्य किरदार नहीं समझा जाता और पारिश्रमिक भी उन्हें अभिनेताओं की तुलना में कम मिलता है।

खेल के क्षेत्र में :- खेलों में मिलने वाली पुरस्कार राशि पुरुष खिलाड़ियों की बजाय महिला खिलाड़ियों को कम मिलती है। चाहे कुश्ती हो या क्रिकेट हर खेल में का प्रसारण भी महिलाओं के खेलों से ज्यादा है।

Scanned with CamScanner

लिंग-भेद के कारण

लैंगिक भेदभाव आज एक समस्या के रूप में समाज में उपस्थित है। लैंगिक भेदभाव के कुछ कारण निम्न है :-

(i) वंश परम्परा का पालन
(ii) पुरुष प्रधान समाज
(iii) रूढ़ियाँ (सामाजिक)
(iv) सम्पत्ति पर अधिकार
(v) शिक्षा का अभाव
(vi) आरक्षण की व्यवस्था
(vii) जागरूकता का अभाव
(viii) सामाजिक असुरक्षा

वंश परम्परा का पालन :- यह लैंगिक भेदभाव का प्रमुख कारण है। परिवार में वंश-परम्परा को कायम रखने में पुरुषों का बोलबाला रहता है। लोगों का मानना है कि वंश पुरुषों से चलता है स्त्रियों से नहीं।

पुरुषप्रधान समाज :- वर्तमान भारतीय समाज में पितृसत्तात्मक मानसिकता जटिल रूप में व्याप्त है। इसके कारण महिलाओं को आज भी एक जिम्मेदारी समझा जाता है।

सामाजिक रूढ़ियाँ :- महिलाओं को सामाजिक और पारिवारिक रूढ़ियों के कारण विकास के कम अवसर मिलते है, जिससे उनके व्यक्तित्व का पूर्ण विकास नहीं हो पाता है। सबरीमाला और तीन तलाक जैसे मुद्दों पर सामाजिक मतभेद पितृसत्तात्मक मानसिकता को प्रतिबिंबित करता है।

सम्पत्ति का अधिकार :- भारत में आज भी व्यावहारिक स्तर (वैधानिक स्तर पर सर्वोच्च न्यायालय के आदेशानुसार संपत्ति पर महिलाओं का समान अधिकार है) पर पारिवारिक संपत्ति पर महिलाओं का

Scanned with CamScanner

अधिकार प्रचलन में नहीं है, इसलिये उनके साथ विभेदकारी व्यवहार किया जाता है।

आरक्षण की व्यवस्था :- राजनीतिक स्तर पर पंचायती राज व्यवस्था को छोड़कर उच्च वैधानिक संस्थानों में महिलाओं के लिये किसी प्रकार के आरक्षण की व्यवस्था नहीं है।

शिक्षा का अभाव :- शिक्षा जैसे मानकों पर महिलाओं की स्थिति पुरुषों की अपेक्षा कमजोर है। हालांकि लड़कियों के दाखिले नामांकन में पिछले दो दशकों में वृद्धि हुई है तथा माध्यमिक शिक्षा तक लैंगिक समानता की स्थिति प्राप्त हो रही है लेकिन अभी भी उच्च शिक्षा तथा व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं का नामांकन पुरुषों की तुलना में काफी कम है।

रोजगार की Under-Reporting :- महिलाओं के रोजगार की Under-Reporting की जाती है अर्थात महिलाओं द्वारा परिवार के खेतों और उद्यमों पर कार्य करने को तथा घरों के भीतर किये जाने वाले वैतनिक कार्यों को सकल घरेलू उत्पाद में नहीं जोड़ा जाता है।

लिंगभेद के कारण सामाजीकरण की प्रक्रिया का संचालन सुचारु रूप से नहीं हो पाता है। घर, बाहर, विद्यालय, कार्यस्थलों पर इस प्रकार के भेदभावों से मनोवैज्ञानिक असुरक्षा का भाव आ जाता है, जो सर्वांगीण विकास में बाधक है।

Scanned with CamScanner

लैंगिक भेद समाप्ति के उपाय

महिलाओं के साथ असमानता और भेदभाव का व्यवहार समाज में, घर में, और घर के बाहर विभिन्न स्तरों पर किया जाता है। इसकी रोकथाम हेतु निम्न कार्य किये जा रहे हैं:-

मानसिकता में बदलाव:- समाज की मानसिकता में धीरे-धीरे परिवर्तन आ रहा है, जिसके परिणामस्वरूप महिलाओं से संबंधित मुद्दों पर गंभीरता से विमर्श किया जा रहा है। तीन तलाक, हाजी अली दरगाह में प्रवेश जैसे मुद्दों पर सरकार तथा न्यायालय की सक्रियता के कारण महिलाओं को उनका अधिकार प्रदान किया जा रहा है।

महिला सशक्तिकरण का प्रयास:- 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ', 'वन स्टॉप सेंटर योजना', 'महिला हेल्पलाइन योजना', और 'महिला शक्ति-केन्द्र' जैसी योजनाओं के माध्यम से महिला सशक्तीकरण का प्रयास किया जा रहा है। इन योजनाओं के क्रियान्वयन के परिणामस्वरूप लिंगानुपात और लड़कियों के शैक्षिक नामांकन में प्रगति देखी जा रही है।

भारतीय संविधान का सकारात्मक कदम:- लिंग-भेद को दूर करने के लिये भारतीय संविधान ने अनेक सकारात्मक कदम उठाये हैं, संविधान की प्रस्तावना हर किसी के लिये सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक न्याय प्राप्त करने के लक्ष्यों के साथ ही अपने सभी नागरिकों के लिये स्तर की समानता और अवसर प्रदान करने के बारे में बात करती है। इसी क्रम में महिलाओं को भी वोट डालने का अधिकार प्राप्त है।

Scanned with CamScanner

रूढ़िवादी सोच में बदलाव :- विकि पुरुषों को ही नहीं बल्कि महिलाओं को भी आज की संस्कृति के अनुसार अपनी पुरानी रूढ़िवादी सोच बदलनी होगी और जानना होगा कि दहेज भी इस शोषणकारी पितृसत्तात्मक व्यवस्था का एक अंग बन गयी है और पुरुषों को खुद पर हावी होने में सहायता कर रही है।

जागरूकता अभियान चलाकर :- लिंग-भेद को कम करने के लिये जनसंचार के साधनों के द्वारा जागरूकता अभियान चलाकर। सार्वजनिक स्थलों जैसे - विद्यालय, बस स्टैण्ड, रेलवे स्टेशन, चिकित्सालयों आदि में महिला हेल्पलाइन के नम्बर अंकित करना तथा सहायता केन्द्रों की स्थापना कर महिला के साथ हो रहे भेदभाव को कम किया जा सकता है।

शिक्षा का प्रावधान :- शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का मुख्य साधन होता है। यह सामाजिक प्रगतिशीलता की प्रक्रिया को गति देता है। औपचारिक शिक्षा तेजी से बदलती दुनिया में आवश्यक कौशल ~~और ज्ञान~~ के साथ शक्ति प्रदान करती है।

इस प्रकार की सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने के लिये सबसे पहले लोगों की अवधारणा को परिवर्तित करने की आवश्यकता है। यह हमेशा कहा जाता है कि अगर एक परिवार की महिला शिक्षित होती है तो वह पूरे परिवार को शिक्षित कर सकती है।

—x—

Scanned with CamScanner